वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

कुछ विशेष क्या करें...!!!

यदि आपके मन में लास्ट सो फास्ट जाने की तीव्र उत्कंठा है तो पूछ लें अपने से कि क्या सचमुच हम भगवान के पास आकर कुछ विशेष करना चाहते हैं? रिटर्न जर्नी का समय है हम खाली हाथ जाना नहीं चाहते, हम तो भरपूर होकर भगवान से सर्व खज़ाने लेकर, और संसार को देते हुए जाना चाहते हैं। पुण्यों की पूंजी इतनी भरकर जाना चाहते हैं कि जन्म-जन्म हमारे काम आये। अपने भाग्य को इतना महान बनाना चाहते हैं कि भाग्य की कमी 84 जन्मों में कभी भी न पड़े। अपने संस्कारों को इतना डिवाइन बनाना चाहते हैं कि जन्म-जन्म हमारे पास रॉयल संस्कार रहें। अपनी बुद्धि को इतना श्रेष्ठ, पवित्र और दिव्य बनाना चाहते हैं कि जन्म-जन्म हमारे पास श्रेष्ठ बुद्धि का वरदान रहे।

पूछ लो कि सचमुच क्या हम ऐसा चाहते हैं? या अपने में ही व्यस्त हो गये हैं? धन कमाना है, बच्चों की पालना करनी है, उनको पढ़ाना है तो सभी को एक विशेष चीज़ पर और ध्यान देना है, हम बहुत सारी चीज़ें पहले कह आये हैं अब पढ़ाई पर आपका ध्यान खिंचाना चाह रहे हैं। भगवान स्वयं पढ़ाने आ गया है, उसकी पढ़ाई क्या कर रही है इसको भिन्न-भिन्न नाम दिए जा सकते हैं। ये ईश्वरीय ज्ञान हमारे चित्त के अंधकार को दूर करने वाला है। ये ईश्वरीय ज्ञान हमें राह दिखाता है, मंज़िल दिखाता है। ये ईश्वरीय ज्ञान जीवन जीना सिखाने वाला है। इस ईश्वरीय ज्ञान द्वारा हम अपने विघ्न और बाधाओं को सहज ही पार कर सकते हैं। ईश्वरीय ज्ञान से ही हम भगवान के समीप जा सकते हैं। मुक्ति-जीवनमुक्ति का वरदान ले सकते हैं। अपनी बुद्धि को डिवाइन बना सकते हैं। सारा खेल ज्ञान का ही तो होता है दुनिया में।

अब बिज़नेसमैन है, उसके पास अपने बिज़नेस का कितना ज्ञान है। उस पर आपकी सफलता निर्भर करेगी। आप स्टूडेंट हैं आपको अपने सिलेबस का कितना ज्ञान है ये आपके अंक इस पर डिपेंड करेगा। हर फील्ड में पढ़ाई मोस्ट इम्पोर्टेंट। तो भगवान पढ़ाने आता है सवेरे-सवेरे, उसकी पढ़ाई पढ़ने आयें, वो परमधाम से आता है हम अपने घर से नहीं आ सकते सेवाकेन्द्र पर? अगर हम ठंडे ही रहेंगे कि हम घर पर ही सुन लेंगे, पढ़ लेंगे, टीवी पर देख लेंगे तो आप सुस्ती के शिकार रहेंगे, आप आलस के शिकार रहेंगे। और आलस भी एक बहुत बड़ा मनोविकार होता है। जो मनुष्य को पूरा ठंडा कर देता है, जो उसको कुछ करने नहीं देता है।

तो रोज़ मुरली की क्लास में मुरली का आनंद लेने आ जाओ। और मुरली सुनाने वालों का भी काम है वे मुरली में रस भरें। वे इस ढंग से सुनायें कि मानो भगवान अपने बच्चों से बात कर रहा है। वो कुछ अच्छी बातें सिखा रहा है। रस भर दें, क्लास में सुन्दर वायब्रेशन्स हो जायें। सबको मुरली सुनने का मन करे, सब मुरली सुनकर उमंग-उत्साह में आ जायें। उनके विचार बदल जायें प्रतिदिन। सुनाने वाले तो निश्चित रूप से सब अलग-अलग होंगे। पर हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि ज्ञान के द्वारा सबसे पहले हमें अपने विचारों को महान बनाना है। ऐसा न हो कि इच्छा तो हो फास्ट जाने की और विचार हों वही पुराने घिसे-पीटे। पास्ट से जो कुछ विचार लेकर आ रहे हैं वो ही कंटिन्यू हैं। उनमें परिवर्तन कुछ भी नहीं आया। क्योंकि विचार परिवर्तन ही तो जीवन परिवर्तन है। विचार बदल दो आपका जीवन बदल जायेगा। विचार बदल दो आपका संसार बदल जायेगा। -क्रमशः

भगवान पढ़ाने आता है सवेरे-सवेरे, उसकी पढ़ाई पढ़ने आयें, वो परमधाम से आता है क्या हम अपने घर से नहीं आ सकते सेवाकेन्द्र पर? अगर हम ठंडे ही रहेंगे कि हम घर पर ही सुन लेंगे, पढ़ लेंगे, टीवी पर देख लेंगे तो आप सुस्ती के शिकार रहेंगे, आप आलस के शिकार रहेंगे। और आलस भी एक बहुत बड़ा मनोविकार होता है। जो मनुष्य को पूरा ठंडा कर देता है, जो उसको कुछ करने नहीं देता है। तो रोज़ मुरली की क्लास में मुरली का आनंद लेने आ जाओ।

बिराटनगर-नेपाल। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा लाइन्स चौंक मैदान में नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में सभा को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. गीता बहन। मौके पर उपस्थित रहे कोसी प्रदेश के सांसद भीम पराजु, उद्योगपति डॉ. मदन कोइराला, सीडीओ, एसएसपी तथा अन्य अतिथिगण।

सेंट पीटर्सबर्ग-रशिया। रुस के सेंट पीटर्स बर्ग स्थित सिटीटेले होटल में आयोजित ग्लोबल इकोनॉमिक फोरम समिट में डॉ. ब्र.कु. सुवर्णा,नागठाणे को ग्लोबल लीडर्स अवॉर्ड्स से सम्मानित करने के पश्चात् समूह चित्र में सेंट पीटर्सबर्ग की निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी। साथ हैं ग्लोबल इकोनॉमिक फोरम के अध्यक्ष हरिओम मारम एवं मिस रशिया वालेरिया अमीर।

इरकुत्स्क-रशिया। ब्रह्माकुमारीज़ इरकुत्स्क सेवाकेन्द्र कई वर्षों से क्रिएटिव एसोसिएशन ऑफ आर्टिस्ट्स 'बाबर' के साथ सहयोग कर रहा है, आज भी इसकी गतिविधियां जारी हैं। सेवाकेन्द्र पर आयोजित वर्षगांठ उत्सव पर ब्र.कु. लुडमिला, नतालिया बाइचकोवा,इरकुत्स्क राष्ट्रीय अनुसंधान तकनीकी विश्वविद्यालय के डिज़ाइन विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर आदि की उपस्थिति रही।

उदयपुर-मोती मगरी(राज.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'स्व सशक्तिकरण द्वारा मूल्यनिष्ठ जीवन' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन हैं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रीटा, ब्र.कु. रश्मि, हाईटेक एग्रीकल्चर इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर हरे राम, अपार्टमेंट के अध्यक्ष विशाल जैन तथा अन्य।

राजगीर-बिहार। विद्यार्थियों के लिए आयोजित 'तनाव मुक्त जीवन के लिए राजयोग मेडिटेशन' कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. नितिश,माउंट आबू तथा अन्य।

ऊपर से नीचे

1. डबल फारेनर्स को तो डबल नशा है ना? सब बात का डबल नशा। प्युरिटी का भी डबल नशा, ... देवी-देवता बनने का भी डबल नशा। (5)
2. आपको ..... रहने की छुट्टी क्यों दी है, जानते हो? क्योंकि ..... रूप में रहते इन महामण्डलेश्वरों को आपको पांव में झुकाना है।(3)
3. कोई कैसा भी हो लेकिन पवित्र वृत्ति अर्थात् सदा हर एक को आत्मिक रूप में देखना वा ..... रूप में देखना।(3)
4. असुल में आप सब डबल विदेशी भारतवासी थे, यह तो सेवा के कारण गये हो। अगर भारतवासी नहीं होते तो भारत की ..... से भी प्यार नहीं होता, इससे सिद्ध है कि आप भारत वाले ही हो।(3)
5. चित्र तो बहुतों के हैं लेकिन ऐसे ..... पूर्वक पूजा और किसी आत्माओं की है? चाहे धर्म पितायें हैं, चाहे नेतायें हैं, चाहे अभिनेतायें हैं, चित्र तो सबके बनते लेकिन चित्रों की रॉयल्टी और पूजा की रॉयल्टी किसी की देखी हैं? (2)
7. चाहे बिमारी आती है, चाहे सेवा आती है, दोनों को अपनी शक्ति से पार करके ..... बन जाते हैं।(3)
9. मधुबन निवासी भी अच्छा पुण्य कमाया जो औरों को चांस दिया, तो चांस देना भी आपके पुण्य के खाते में ..... हो गया।(2)
10. आप (दादी जानकी) साथियों को थकाती बहुत हो। लेकिन इस थकावट में भी मौज़ समाई हुई होती है। लेकिन जब भाषण करके दुआयें ले आते हैं ना तो ..... बदल जाता है। (3)
12. आपकी सहनशीलता से गाली देने वाले भी आपको ..... लगायेंगे। सहनशीलता में इतनी शक्ति है, लेकिन थोड़ा समय सहन करना पड़ता है।(2)
13. जब आप आत्मायें ..... में भी रहती हो तो आत्मा रूप में भी आपकी रूहानी रॉयल्टी विशेष है। सर्व आत्मायें भी लाइट रूप में हैं लेकिन आपकी चमक सर्व आत्माओं में श्रेष्ठ है।(5)
14. कोई कैसा भी हो सदा हर एक को आत्मिक रूप में देखना वा फरिश्ता रूप में देखना। तो वृत्ति, दृष्टि और तीसरा कृति अर्थात् कर्म में भी सदा हर ..... को सुख देना और सुख लेना।(2)
15. भारत ..... है, तो भारतवासी भी ..... हैं। भारत से बाप का प्यार है तब तो भारत में आया ना। (3)
16. ब्राह्मण जीवन की पर्सनाल्टी प्युरिटी है और प्युरिटी ही ..... रॉयल्टी है।(3)
17. पहले बापदादा आप सबका साथी है और ..... साथ निभाने वाले हैं। बाबा कहा और बाबा हाजिर है। (4)
22. डबल विदेशी बच्चों को दोनों काम करने का अभ्यास तो है ही। ..... भी करते हैं सेन्टर भी सम्भालते हैं, इसलिए बापदादा डबल मुबारक भी देते हैं। (2)

अव्यक्त मुरली 25-10-2002 (पहेली-20)2024 -25

1		2		■	3		4	■	5
	■		■	■		■		■	
			■	■		■	6	7	■
	■	■	8	9	■	10	■		
11	12		■		■				■
■		■	13	■	14		15	■	16
17	■	18				■		■	
19		■		■	■	20		■	
	■	■	21			■	■	22	■
	■	23		■	■	24			

19/24- पहेली का उत्तर
(अव्यक्त मुरली 08-10-2002)

ऊपर से नीचेः 1.आदि, 2.कमाई, 3.समय, 4.गीत, 5.सागर, 7.वरदानी, 8.सेवाधारी, 9.प्रेम, 10.मन, 12.दानी, 14.पालना, 15.नेचर, 16.एकानामी, 17.स्वमान, 19.दवा, 20. नशा।

बायें से दायेंः 1.आत्मिक, 3.सहयोगी, 6.यज्ञ, 10.मदर, 11.मधुबन, 12.दाता, 13.आधार, 14.पानी, 15.नेचुरल, 18.फादर, 21.देना, 22.नदी, 23.अशान्ति।

बायें से दायें

1. विश्व सेवा के कारण अलग-अलग स्थान में पहुँचे हो। भाषायें देखो कितनी हैं। तो भारत से भाषायें सीखने जायें या सेवा करने जायें, इसलिए आपको सेवा के लिए वहाँ का जन्म मिला है। आदि ..... में भी भारत में थे, बीच में भी भारत के ही थे, अभी थोड़े समय के लिए सेवा के लिए गये हुए हो।(4)
3. परमधाम में सर्व आत्मायें भी लाइट रूप में है लेकिन आपकी चमक सर्व आत्माओं में श्रेष्ठ है। याद आ रहा है परमधाम? अनादि काल से आपकी झलक ..... न्यारी है।(3)
6. सूर्य, सूरज (2)
8. बापदादा हर एक बच्चे की पवित्रता की रॉयल्टी देख रहे हैं। ब्राह्मण जीवन की रॉयल्टी है ही प्युरिटी। तो हर एक बच्चे के सिर पर रूहानी रॉयल्टी की निशानी प्युरिटी का लाइट का ..... देख रहे हैं। (2)
11. बच्चों की ..... अच्छी है तब यहाँ पहुंचते हैं। और यही बाप से प्यार बच्चों को आगे बढ़ाता रहेगा।(3)
14. बापदादा साइंस के साधन देने वालों को भी मुबारक देते हैं। नीचे भी ..... से सुन रहे हैं।(3)
18. दुनिया वाले कहते हैं ..... सर्वव्यापी है और आप कहते हो नहीं है। लेकिन बापदादा कहते हैं कि अभी समय प्रमाण हर टीचर में बाप प्रतक्ष दिखाई दे तो सर्वव्यापी दिखाई देगा ना!(4)
19. डबल विदेशी आत्मायें जो सेवा के निमित्त बन गये हैं, वह ..... के कोने-कोने में बाप का सन्देश पहुंचाने के निमित्त बने हुए हैं।(2)
20. अभी टीचर्स मिलकरके यह ..... बनाओ कि अपने चलन और चेहरे से बाप को प्रत्यक्ष कैसे करें?(2)
21. रिस्पेक्ट नहीं करता, इन्सल्ट करता, गाली देता, आपको डिस्टर्ब करता, तो यह क्या है अच्छी चीजें हैं। फिर आप लेते क्यों हो? थोड़ा-थोड़ा तो ले लेते हो, पीछे सोचते हो नहीं लेना था। तो अभी लेना नहीं। लेना अर्थात् मन में ..... करना, फील करना।(3)
23. सेवा के निमित्त तो हो ही और सभी अपने-अपने स्थान पर सेवा तो अच्छी कर ही रहे हो। बाकी अभी जो ..... दिया है, उसका प्लैन बनाओ।(2)
24. बच्चे जो सभी हैं वह सब होस्ट हैं, गेस्ट नहीं हैं। निशानी में कहते हैं, गेस्ट लेकिन हो होस्ट। .....अच्छा लगता हैं ना?(4)